ओम् शान्ति

07 दिसम्बर 2014 ओआरसी (दिल्ली)

ओआरसी के 14वें वार्षिक उत्सव पर परम आदरणीया दादियों (जानकी दादी जी व गुल्ज़ार दादी जी) का ओआरसी में शुभ आगमन

अव्यक्तमूर्त बापदादा जी के अति स्नेही सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई–बहनों को ओआरसी से ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार।

बाद समाचार कि 6 दिसम्बर रात्रि 8 बजे हम सभी की प्रिय आदरणीया जानकी दादी जी व गुल्ज़ार दादी जी का ओआरसी में शुभ आगमन हुआ। दोनों दादियों के पहुँचने पर सभी ओआरसी निवासी एवं दिल्ली के वरिष्ठ भाई–बहनों ने दादियों का फूल एंव गुलदस्तों और खुशी की रास करते हुए अभिनन्दन किया। इस शुभ अवसर पर ओआरसी को बहुत सुन्दर ढ़ंग से सजाया हुआ था। दोनों दादियों को फरिश्ते रूप में देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो स्थूल वतन सूक्ष्म बन गया हो।

ओआरसी निवासी व दिल्ली के वरिष्ठ भाई–बहनों के साथ दोनों दादियों की मीठी रूह–रिहान

जानकी दादी जी– बड़ा वन्डरफुल ड्रामा है, कभी स्वप्न में भी नही सोचा था कि हम ऐसे आयेंगे। दादी आप बाबा के पास कैसे चली जाती हो, ये भी भाग्य है। दादी मुझे प्यार से गले लगाकर, खिलाकर, पिलाकर ऐसे यहाँ लाई जैसे साकार पालना हो। मुझे यहाँ बहुत अच्छा लगता है। ऐसा खेल किया है, बाबा यहाँ खेलने के लिए लाया है। रूक्मणी दादी तो बचपन से मेरी सखी है।

गुल्ज़ार दादी जी– इस बार हमको भी दादी के साथ मिलने का अनुभव बहुत अच्छा हुआ। दादी ऐसे बात करती थी, जैसे सखी हो। इस बार दादी फ्रेन्ड के रूप में थी, ये अनुभव बहुत अच्छा लगा। दादी तो दादी है, लेकिन इस बार दादी का मिलने का स्वरूप बदल गया। दादी का बोलना, खाना, खिलाना और चलना सब फ्रेन्ड के रूप से ही था।

जानकी दादी जी– हम दोनों को बाबा देख रहा है क्या कर रही हैं। दादी से तो बाबा दिखाई देता है। दादी के साथ मैं यहाँ आई मुझे बहुत शक्ति मिली। ऐसा भाग्य जो ख्वाब में भी नही सोचा था। दादी के साथ कार में, प्लेन में और यहाँ भी साथ–साथ आई हूँ। आशा बहन ने ऐसा निमंत्रण पत्र लिखा जो खिंचकर आ गई, ये निमंत्रण तो बहाना है। ये ड्रामा भी वन्डरफुल है जो मुझे दादीजी के संग खींचकर ले आया। गीता बहन को भी बाबा ने मुरली में याद किया। दादी ने दिल्ली में पुराने यादगार ऐसे बनाये हैं, जो आज दिल्ली ऐसी मस्त बन गई और सबको मस्ती में चला रही है। मेरा कोई स्थान नही है, बाबा ने कहा हमें फरिश्ता बनना है, पृथ्वी से भी पार जाना है। आज ऐसे पुराने बाबा के बच्चों को देख मेरा दिल अन्दर में नाच रहा है। बाबा ने कहा तुम साक्षी हो रहो तो मैं साथी रहूँगा। आपने गीत बजाया चलते–चलते यूँ ही कोई मिल गया तो मैं मन ही मन नाच रही थी। मैं दीदी के संग भी इस गीत पर नाचती थी, उस घड़ी बहुत नशा चढ़ता था। अभी–भी चलते–चलते गीत मेरे लिए बजता है, बाबा ने कितना सुन्दर गीत बनाया है।

गुल्ज़ार दादी जी– ये भी हमारा ड्रामा में पार्ट था क्योंकि हम दोनों ही विशेष पार्ट बजाने वाले, क्लास कराने वाले थे। एक–दो के साथ ऐसे रहते हैं जैसे फ्रेन्ड होते हैं। दादी, दादी के रूप में नहीं बल्कि दादी के टाइम दादी और बाकी टाइम

सखी। दोनों ही पार्ट दादी के सुन्दर से सुन्दर हैं। इस बार ये सुन्दर से सुन्दर चांस मिला।

जानकी दादी जी– दादी के साथ फ्रेन्डशिप का भी रिश्ता है, ड्रामा अनुसार मैं तो भोली–भाली हूँ, कुछ भी नही जानती, परन्तु दादी के साथ फरिश्ता बनने की नेचर बन गई। किसने पढ़ाया क्या पढ़ाया वो प्रैक्टिकल है। बाबा ने हमें मनुष्य से देवता बनने की पढ़ाई पढ़ाई। ऐसे नही कि साधारण देवता हैं, परन्तु हम नई दुनिया के मालिक बनते हैं। तो हम नई दुनिया में जाने वाले क्या कर रहे हैं? हम तो उड़कर आये हैं हमको बाबा ने कहा रात के राही थक मत जाना, बचपन के दिन भुला न देना। बाबा मुरली चलाते समय जो गीत बजाते थे, मैंने कहा वो मुझे लिखकर भेजो। राजू ने 13–14 गीत लिखकर भेजे थे, आज भी वो दिन याद आते हैं। ओम शान्ति!!